राम मंदिर और भारतीय राजनीति

डॉ संजय कुमार शर्मा
सहायक आचार्य – भूगोल
राजकीय महाविद्यालय, बसवा

ABSTRACT

भारत एक धर्म निरपेक्ष राष्ट्र है जिसमें हिन्दू धर्म के अनुयायी प्रधान रूप से मिलते हैं। हिन्दूओं में 33 करोड़ देवी–देवताओं को पूज्य माना गया है। इनमें से ही एक श्रीराम भारतीयों के आराध्य देव है। श्रीराम का जन्म त्रेता युग में रामनवमी को वर्तमान कालीन अयोध्या रूपी नगर में 88100 वर्ष पूर्व हुआ था। ये भगवान श्री विष्णु के अवतार थे। श्रीराम अपनी नैतिकता, श्रेष्ठ चरित्र, उत्तम आदर्शो, प्रजा कल्याणकारी तथा गुरुभक्त होने के कारण मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम के नाम से जाने जाते हैं। भारत पर स्थानीय शासकों के पश्चात मुगल आक्रांताओं का अधिकार रहा है। इसी शासन काल के दौरान भगवान राम के पूज्य मंदिर रूपी स्थान को तोड़कर उसके स्थान पर बाबरी मस्जिद बनायी गयी थी। लम्बे मुगल शासन के कारण इस और लोगों का ध्यान होते हुए भी प्रखर विरोध नहीं हो सका किन्तु जैसे जैसे मुगल शासन कमजोर होने लगा राम मंदिर के पक्ष में पुनः माहौल बनने लगा। स्वतंत्रता के पश्चात यह माहौल और अधिक अग्रसर हुआ। स्वतंत्रता से पूर्व भारतीय राजनीति का एकभाग उद्देश्य अंग्रेजों के शासन से मुक्ति पाना था। 1947 में आजादी के पश्चात भारत एक लोक कल्याणकारी राज्य बन गया तथा 26 जनवरी 1950 से लोकतांत्रिक शासन व्यवस्था का प्रारम्भ हुआ। इस समय भारतीय राजनीति में एक ही दल राष्ट्रीय कांग्रेस की प्रभुसत्ता थी किन्तु अरि–धीरे वैचारिक मतभेद होने के कारण श्यामा प्रसाद मुखर्जी द्वारा जनसंघ का गठन किया गया। यह पार्टी हिन्दुत्ववादी विचारधारा की समर्थक थी धीरे–धीरे इस पार्टी ने राम मंदिर को अपना राजनीतिक मुद्दा बना लिया, जो हिन्दू बहुल भारतीयों की प्रबल कामना भी थी। राममंदिर रूपी यह मुद्दा आज भी जारी है भारतीय राजनीति इस मुद्दे से अत्यधिक प्रभावित हुयी है। 22 जनवरी 2024 को राममंदिर का उद्घाटन भले ही सम्पन्न हो गया हो किन्तु इस मुद्दे का प्रभाव भारतीय राजनीति पर आगे भी देखने को मिलता रहेगा।

Keyword:- **धर्म निरपेक्ष**–सभी धर्मो को मानने की स्वतंत्रता, **आराध्य**–पूजे जाने योग्य, **त्रेतायुग**–चार युगों में से एक युग जिसमें श्रीराम का जन्म हुआ, **आक्रांता**–आक्रमण करने वाले, **लोकतंत्र**–लोगों द्वारा अपने लिए चुना जाने वाला शासन। **जनता दल**–वर्तमान भारतीय जनता पार्टी का प्रारम्भिक दल।

क्षेत्र परिचय – भारत एक विशाल भौगोलिक क्षेत्रफल वाला राष्ट्र है। यहाँ मिलने वाली आर्थिक, सामाजिक व भौतिक भिन्नताओं की अधिकता के कारण इसे उपमहाद्वीप की संज्ञा दी गयी है। भारत एक लोकतांत्रिक राष्ट्र है जिसका अपना लिखित संविधान है यह विश्व में सबसे बड़ा लिखित व अद्वितीय संविधान है। जनमानस के हितों की परम्परागत प्रक्रिया ने इसे लोकतांत्रिक आधार प्रधान किया है। भारतीय राजनीति की धुरी इस लोकतांत्रिक व्यवस्था के इर्द–गिर्द घूमती

है। परम्परागत रूप से अंग्रेजी शासन, मुगल शासन का विरोध, धार्मिक व जातीय दशाएँ भारतीय राजनीति के केन्द्र रहे है। धार्मिकता की भावना भारतीय जनमानस का आधार स्तम्भ रही है। राम मंदिर निर्माण का मुद्दा ऐसा ही एक धार्मिक मुद्दा रहा है जिससे भारतीय राजनीति में सरकार बनती और गिरती रही है। राममंदिर का सम्बन्ध भारतीय मैदानी राज्य उत्तरप्रदेश के अयोध्या नगर से है। अयोध्या पौराणिक काल की सबसे प्राचीन व पवित्र माने जाने वाली सात नगरियों में से सबसे पहली है। अयोध्या का सर्वप्रथम वर्णन अथर्ववेद में मिलता है इसमें अयोध्या को देवताओं की नगरी कहा गया है। ब्रह्मा के मानस पुत्र मनु ने इसकी स्थापना की थी। इसका निर्माण भगवान विष्णु की सलाह पर स्वयं देवशिल्पी विश्वकर्मा की देखरेख में हुआ था। स्कंदपुराण के अनुसार अयोध्या भगवान विष्णु के चक्र पर विराजमान है। अयोध्या नगरी ने सदियों से कालचक्र के अनेक उतार–चढ़ाव देखे। मान्यतानुसार जिस स्थान पर भगवान श्रीराम का जन्म हुआ था, उसे राम जन्म भूमि कहा गया है। इसी स्थान पर श्री राम मंदिर निर्माणाधीन है जहाँ हाल ही में 22 जनवरी को राम मंदिर के गर्भगृह में श्रीराम के बाल रूप में रामलला की प्राण प्रतिष्ठा की गयी है। अपने प्रारम्भिक चरण से लेकर प्राण प्रतिष्ठा तक राममंदिर का मुद्दा सदैव चर्चा व भारतीय राजनीति का हिस्सा बना रहा है। अयोध्या का मतलब है जिसे शत्रु जीत न सके। आजाद भारत में अयोध्या को लेकर बेइन्तहा बहसे हुई है। सालों–साल नैरेटिव चले पर किसे ने उसे बूझने की कोशिश नहीं की। राम जन्मभूमि का यह आंदोलन लगभग 450 साल तक चला है।

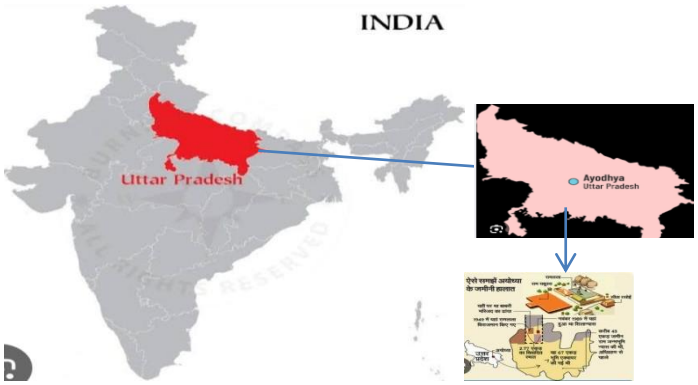

अध्ययन का उद्देश्य –

1. राम मंदिर के बारे में विशद्कालिक जानकारी प्रदान करना।
2. भारतीय राजनीति और राम मंदिर के सम्बन्धों को समझाना।
3. भारतीय लोकतांत्रिक व्यवस्था में राम मंदिर की भूमिका को बताना।

शोध परिकल्पनायें –

1. राम मंदिर मुद्दे से भारतीय धार्मिक भावना संयोजित है।
2. इस मुद्दे ने भारतीय राजनीति को लम्बे समय तक प्रभावित किया है।
3. राम मंदिर मुद्दा आगे भी भारतीय राजनीति को प्रभावित करता रहेगा।

विधितंत्र –प्रस्तुत शोध पत्र को तैयार करने के लिए प्राथमिक एवं द्वितीयक समको का प्रयोग किया गया है। प्राथमिक समंको के रूप में लोगों के विचारों, अनुमानों व भावनाओं को आधार मानकर प्रश्नावली के माध्यम से आंकडे एकत्रित किये गये हैं। द्वितीयक स्त्रोतों के रूप में विभिन्न

पत्र–पत्रिकाओं, पौराणिक पुस्तकों, इन्टरनेट व प्रकाशित तथा अप्रकाशित सामग्री का प्रयोग किया गया है। शोधपत्र में आवश्यकतानुसार मानचित्रों, सांख्यिकी विधियों व आधुनिक तकनीकी साधनों के साथ–साथ आरेखों, आलेखों का प्रयोग कर निष्कर्ष तक पहुँचने का प्रयास किया गया है।

राम मंदिर के संघर्ष का प्रारम्भ – अयोध्या ने एक लम्बी समयावधि तक राम मंदिर के अथक संघर्ष को देखा है। राम मंदिर के संघर्ष का बीडा कभी साधु–संतो ने उठया, तो कभी धर्म–गुरूओं ने कभी राजनीतिक दल इसके अग्रवाहक बने तो कभी राजनीतिक दल के नेता आगे आये। इस आंदोलन के कारण भारत में कई सरकारे बनी और कई सरकारे ताश के पत्तों की तरह भरभरा कर तहस–नहस हो गयी। इस दौरान एक अजीब सी आंधी देखने को मिली थी। कहावतानुसार बाबर के सेनापति मीर बांकी ने 1526– 1528 के मध्य राम मंदिर को तोड़कर उसी के मलबे से बाबरी मस्जिद का निर्माण करवाया था किन्तु इसके पश्चात भी लम्बे समय तक इसे सीता रसोई मस्जिद या जन्म स्थान मस्जिद कहा जाता रहा था। सन् 1528–1781 के बीच इसे लेकर हिन्दू–मुस्लिमों के बीच लगातार संघर्ष होता रहा। सन् 1852 में अवध के नवाब वाजिद अली शाह ने प्रथम बार सरकार के समक्ष सामुदायिक मारपीट की सूचना भेजी थी। 1949 में विवादित स्थल पर पहले से ही ताला लगा हुआ था किन्तु 1949 में ढाँचे के अन्दर भगवान राम की मूर्तियाँ मिली यही से आन्दोलन की असली नींव पडी थी।

सन 1951 के पश्चात जब 1986 में बाबरी मस्जिद का ताला खोलने का आदेश आया तो हिन्दुओं के चेहरे खिल उठे। फैजाबाद अदालत के फैसले के बाद ताले खोल दिये गये किन्तु मुस्लिम धर्म के लोगों ने फैजाबाद की अदालत के फैसले को न मानकर बहिष्कार चालू कर दिया जिससे धार्मिक व राजनीतिक उफान चरम पर पहुँच गया इससे अनेक नये–नये नेता उभरे तो कई नेताओं की राजनीति भी डूब गयी।

राम मंदिर आंदोलन का घर–घर पहुँचना – इसी दौरान दो ऐसी घटनाएं घटी जिन्होंने राम मंदिर आंदोलन को घर–घर पहुँचाने का कार्य किया। प्रसिद्ध टेलीविजन धारावाहिक रामायण ने राम को और शिला पूजन ने राम मंदिर आंदोलन को प्रत्येक घर तक पहुँचाने का कार्य किया। धारावाहिक के दौरान प्रयुक्त होने वाला जय श्रीराम का नारा जन नारा बन गया। इस धारावाहिक ने हिन्दुओं को राममय कर दिया तथा एकता के सूत्र में बाँधने का कार्य किया जिसने राममंदिर निर्माण के लिए लोगों में जुनून पैदा कर दिया। शिला पूजन के एक अन्य घटनाक्रम ने राममंदिर आंदोलन में आग में घी डालने का कार्य किया। मोरोपंत पिंगले की राजनीति के तहत सम्पूर्ण भारत को 11 क्षेत्रों में बांटकर शिला पूजन के कार्य को प्रारम्भ किया गया। इसमें हर गाँव से एक शिला की पूजा करके उसे जिला मुख्यालय फिर राज्य मुख्यालय और अन्त में अयोध्या पहुंचाना था। इसमे शिला को केसरिया कपडा पहनाकर रथ में रखा जाता था इस प्रकिया ने हजारों लोगों को एकत्रित होने व एकजुटता प्रदर्शित करने में सहयोग दिया ।

भारतीय राजनीति में भूचाल आना– विवादित क्षेत्र में विश्व हिन्दू परिषद् ने मंदिर बनाने की घोषणा कर भारतीय राजनीति को हिला दिया। सन् 1885 में पहली बार मंदिर निर्माण की मांग अदालत पहुंची थी। रघुवर दास नामक महंत ने राम चबूतरे पर एक मंडप बनाने की अनुमति मांगी थी। इसके 80 वर्ष पश्चात 1964 में विश्व हिन्दू परिषद की स्थापना हुयी। 1986 में बाबरी का ताला खुलते ही बाबरी मस्जिद एक्शन कमेटी का गठन किया गया। इसी क्रम में 1989 में विश्व हिन्दू परिषद ने धर्म संसद में राम मंदिर के शिलान्यास की घोषणा कर 30 सितम्बर की तिथी घोषित कर दी। इस दौरान मंदिर निर्माण हेतु पैसे एकत्रित करने की योजना को विश्व

हिन्दू परिषद प्रमुख अशोक सिंघल ने आगे बढ़ाया। इसी दौरान जून 1989 में भाजपा ने अपने राजनीतिक घोषणा पत्र में पहली बार मंदिर आंदोलन को शामिल कर खलबली मचा दी। इसके पूर्व राम जन्मभूमि मुक्ति यज्ञ समिति 1984 में बन चुकी थी। भारतीय राजनीति में इससे विवाद उत्पन्न हो गया जिसे तत्कालीन गृहमंत्री बूटासिंह ने कम करने का प्रयास अवश्य किया था।

तिवारी–राजीव विवाद व शिलान्यास – निरन्तर चल रही शिला यात्राओं के मध्य केन्द्र सरकार शिलान्यास की अडचनों को दूर करने में लगी थी। उत्तरप्रदेश के मुख्यमंत्री एन. डी तिवारी इसके लिए तैयार नहीं थे उन्होंने राजीव गांधी के शिलान्यास प्रस्ताव को नकार दिया। तिवारी को मनाने के लिए गृहमंत्री बूटासिंह को भेजा गया। बाबरी एक्शन कमेटी के लोग शिलान्यास की जमीन को विवादित बता रहे थे किन्तु देवरहा बाबा ने शिलान्यास की जगह बदलने से स्पष्ट मना कर दिया था। चुनाव की घोषणा हो जाने से चिंतित प्रधानमंत्री ने मार्च में होने वाले चुनावों को इससे पहले नवम्बर में तय करवा दिया। सरकार ने हलफनामे द्वारा शिलान्यास वाली जमीन को गैर विवादित घोषित करने के लिए फैजाबाद जिलाधिकारी की निर्देश दिया। अन्ततः 10 नवम्बर को बिहार के कामेश्वर चौपाल के हाथों पहली शिला रखी गयी। इस शिला का निर्माण 56 यज्ञों की भस्म से किया गया था। मंदिर यहीं बनायेंगे के नारे के साथ अष्टधातु से बने साँप नींव मे डाले गए। इसके बाद उग्र प्रदर्शन हुए किन्तु कुछ समय बाद बाबरी एक्श्न कमेटी के हस्तक्षेप से शांत हो गये। राजीव गांधी इस मौके को भुनाने के लिए अपनी पहली चुनाव सभा करने अयोध्या जा पहुँचे किन्तु इस प्रयास को पार्टी की आपसी फूट ने गलत साबित कर दिया।

भाजपा का उदय – अयोध्या में हुए शिलान्यास ने भाजपा को 2 सीटों से 85 सांसदों वाली पार्टी बना दिया। हम एक तरह से यह कह सकते हैं कि राम मंदिर शिलान्यास भाजपा के लिए तारणहार नाव बनकर उभरा। इससे भारतीय राजनीति की दशा व दिशा दोनों बदल गयी। अपनी भष्ट्राचार विरोधी छवि के चलते जनता दल के विश्वनाथ प्रताप सिंह प्रधानमंत्री बनने में कामयाब हुए। कांग्रेस पार्टी सत्ता से बाहर हो गयी। इस शिलान्यास ने हिन्दूवादी राजनीति का मजबूत प्रासाद खडा कर दिया था।

कारसेवा और भारतीय राजनीति – भाजपा के सहारे चल रही विश्वनाथ सिंह की सरकार अयोध्या का हल निकालना चाहती थी किन्तु इसके लिए विश्व हिन्दू परिषद और बाबरी एक्शन कमेटी तथा वी. पी. सिंह व मुलायम सिंह सरकार प्रतिध्रुवस्थ भूमिका में थे।

भाजपा के दवाब के चलते वीपी सिंह साधु–संतो की बैठके करते थे जिसे कार सेवा का रूप दिया गया था। मुलायम सिंह इन बैठकों को अपने लिए खतरा मानते थे। इसी कारण मुलायम सिंह ने बाबरी समर्थकों का सहारा लिया व बाबरी कमेटी के लोगों को अपनी सरकार में मंत्री, सांसद व कानूनी सलाहाकर बना दिया। मुलायम की इस चाल ने उत्तरप्रदेश को मजहबी ध्रुवीकरण की ओर धकेल दिया। समाज में वैमन्सयता का उदय हुआ तथा स्थिति बिगड़ती गयी एवं केन्द्र सरकार व राज्य सरकार आपस में तनातनी पर आ गयी।

रथयात्रा, मोदी की रणनीति व धार्मिक आस्था – सन् 1990 में इलाहबाद में विश्व हिन्दू परिषद समर्थकों, साधु–संतो का 27–28 जनवरी को सम्मेलन हुआ। इसमें 14 फरवरी को अयोध्या में कारसेवा की घोषणा की गयी। इसने एक बार फिर भारतीय राजनीति को हिलाने का काम किया। वीपी सिंह सतर्क हुए और साधु–संतो तथा विहिप नेताओं की बैठके बुलायी गयी किन्तु तमाम कोशिशों के बावजूद बात नहीं बनी। इस दौरान नरेन्द्र मोदी की रणनीति के तहत लालकृष्ण आडवानी गुजरात से रखयात्रा पर निकल पड़े जिसमें भाजपा के सभी सांसदों, विधायको यहाँ तक की कारसेवा में मुस्लिमों से भी शामिल होने का आव्हान किया गया था। इस यात्रा से मोदी को एक नयी पहचान मिली। रथ की महिमा में दिनों–दिन वृद्धि होती गयी। लोग रथ गुजरने के पश्चात मिट्टी को अपने सिर पर लगाने लगे। वीपी सिंह ने घबराकर विवादित स्थल के आसपास तीस फीट जमीन छोड़कर शेष पूरे इलाके का अधिग्रहण सरकार को करने के लिए कह दिया।

भाजपा की राह में लालू का रोडा बनना :– आडवानी की रथयात्रा चरम पर थी लाखों लोगों के खान–पान, सेवा–पानी की व्यवस्था हो रही थी। मुलायम सिंह इसे रोकना चाहते थे उन्होंने बेरिकेड्स लगवाकर, खाइयाँ बनवाकर, ऐलान कर दिया कि अयोध्या में परिंदा भी प्रवेश नहीं कर सकता है। वीपी सिंह ने यहाँ दोहरी बाजी खेलते हुए भाजपा से टकराव का मन बनाकर जमीन अधिग्रहण अध्यादेश वापस ले लिया। मुलायम रथ रोंके इससे पूर्व ही वीपी सिंह ने लालू यादव से आडवानी की रथ यात्रा रुकवा दी। इस तरह रथयात्रा पर विराम लगा और आड़वाणी पर रासुका का केस दर्ज किया गया।

वीपी सिंह व मुलायम सिंह की स्थिति में बदलाव – लालकृष्ण आडवानी की गिरफ्तारी के बाद भाजपा ने समर्थन वापस ले लिया जिससे वीपी सिंह सरकार अल्पमत में आ गयी। अयोध्या अब तक एक वोट बैंक बन चुकी थी। मुलायम सिंह को मुस्लिम पक्ष लेने के कारण मुल्ला मुलायम कहा जाने लगा। मुलायम सिंह की बढ़ती बंदिशों ने कारसेवकों में जोश भरने का कार्य किया। अयोध्या में बड़े पैमाने पर गिरफ्तारियाँ हुयी। आस्था का अद्भूत नमूना अस्थायी कारवासों में दृष्टिगत हो रहा था।

अयोध्या गोली काण्ड व दंगो का प्रारम्भ :– मुलायम सिंह की बंदिशों के मध्य कारसेवको व राज्य पुलिस कर्मियों के मध्य आस्था व देशसेवा भाव दोनों एक साथ दृष्टिगत हो रहे थे। 30 अक्टुबर को कारसेवको का पूर्णिमा स्नान प्रारम्भ हुआ। कारसेवको के खदेड़ने के भरसक प्रयास किये गये तथा कारसेवकों को दौड़ा–दौड़ाकर गलियों में गोलियों से निशाना बनाया गया। अत्यधिक बर्बरता व निर्ममता ने सबको आहत कर दिया। इससे अनेक शहरों में दंगे प्रारम्भ हो गये व लोगों का विरोध प्रदर्शन होने लगा।

कारसेवकों का रोद्ररूप व ढाँचा विध्वंस :– 6 दिसम्बर 1992 गीता जयंती के अवसर पर एक नया महाभारत आरम्भ हुआ। कारसेवक तोड़–फोड़ मचाते हुए गुम्बदों पर चढ़ गये सर्वप्रयम तीन गुम्बदों में छेद करके उनमें झंडे गाड दिये। साधुओं की मौजुदिगी में रामकथा कुन्ज से भाषण शुरू हुआ। कुछ समय पश्चात कारसेवकों ने

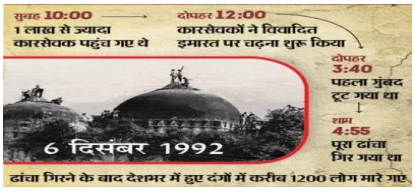

पुलिस बल पर पथराव प्रारम्भ कर दिया तथा पलक झपकते ही दो सौ, तीन सौ, फिर हजार, दो हजार से 20–25 हजार कारसेवको का दल वहाँ पहुँच गया। सम्पूर्ण परिसर को कारसेवकों ने अपने कब्जे में ले लिया तमाम नेता हक्के–बक्के व सुरक्षाकर्मी देखते रह गये।

नरसिंहराव पर दबाव व सरकारों की बर्खास्तगी :– बाबरी विधवंस ने नरसिंह राव को पंचिंग बैग बना दिया। 6 दिसम्बर शाम को आयोजित बैठक में राव की स्थिति काटो तो खून नहीं वाली थी। इसी दबाव के चलते 7–10 दिसम्बर के मध्य उन्होंने आर एस एस, बजरंग दल, विहिप व जमायते इस्लामी व इस्लामिक सेवा संघ पर प्रतिबंध लगा दिया। 15 दिसम्बर को राजस्थान, मध्यप्रदेश, हिमाचल प्रदेश की सरकारों को बर्खास्त कर दिया गया। इससे भाजपा रक्षात्मक से आक्रामक बन गयी।

सर्वोच्च न्यायालय का फैसला :– 2019 में भारत के सर्वोच्च न्यायालय ने विवादित भूमि पर फैसला सुनाया जिसमें कहा गया कि यह भूमि हिन्दूओं की है और इस पर राम मंदिर का निर्माण कर सकते है। 5 अगस्त 2020 को राम मंदिर निर्माण की शुरुआत के भूमि पूजन किया गया तथा राम मंदिर का निर्माण श्री रामजन्म भूमि पूजन तीर्थ ट्रस्ट की देखरेख में होना तय हुआ। 2022 में नींव रखने पर फिर राजनीति प्रारम्भ हुयी व निर्मोही अखाडा प्रवक्ता महंत सीताराम दास ने इसकी आलोचना की। हिन्दू महासभा के पंडित अशोक शर्मा ने भाजपा द्वारा पूरे मामले का राजनीतिकरण करने का आरोप लगाया।

जय श्रीराम भारतीय राजनीति का अद्भूत नारा बना– भाजपा की वाजपेयी नेतृत्व वाली सरकार ने मंदिर मुद्दे से दूर हटकर इंडिया शाइनिंग का नाम दिया जिसके कारण 2004 में पार्टी चुनाव हार गयी। इसी कारण 2009 में पार्टी ने फिर राममंदिर का मुद्दा समाने रखा तथा 2014 में नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में भाजपा भारत की सबसे बड़ी पार्टी बनकर उभरी। मोदी की हिन्दूवादी व विकासवादी नीति लोगों के सर चढ़कर बोलने लगी। मंदिर मुद्दे ने भाजपा को ताकत प्रदान की इसी बीच कांग्रेसियों की फूट उन्हें रसातल की ओर ले गयी। राम मंदिर मुद्धा न केवल भाजपा के उदय का कारण बना अपितु कांग्रेस के पतन का कारण भी बना है। मनमोहन सरकार के दौरान रामसेतु का विवादित निर्णय भी, इसमे ताबूत की आखिरी कील सिंद्ध हुई। 2019 के बाद भारतीय जनता पार्टी की हिन्दूवादी नीति, भूमिपूजन, धार्मिक आस्था केन्द्रों के उन्नयन ने सम्पूर्ण हिन्दू लोगों को एकता के सूत्र में बांधने का कार्य किया है।

पीएम मोदी ने रखी मंदिर निर्माण की नींव

राम मंदिर उद्घाटन व भारतीय राजनीति :– भूमिपूजन के पश्चात भी श्री राम मंदिर मुद्दे ने भारतीय राजनीति का पीछा नहीं छोडा। 22 जनवरी 2024 को मंदिर उद्घाटन की तिथि घोषित होते ही भारतीय राजनीति में एक बार फिर उबाल आ गया। विपक्षी पार्टीयों ने इसका भरसक फायदा उठाने की कोशिश। 10 जनवरी को कांग्रेस पार्टी ने उद्घाटन समारोह को आर एस एस/भाजपा का समारोह कहकर निमंत्रण अस्वीकार कर दिया। इसे न्यायिक धोखाधडी तथा बाबरी मस्जिद की जमीन पर बनाये गये मंदिर की संज्ञा दी। साधु–संतों और विपक्षी दलों ने मंदिर का पूर्ण निर्माण

न होने पर भी गर्भगृह का उद्घाटन करना भाजपा का एक चुनावी मुद्दा बता दिया। आर एस एस कार्यकर्त्ताओं द्वारा घर–घर पीले चावल बाँटकर लोगों को एकजूट किया गया जिसका फायदा निश्चित ही 2024 के लोकसभा चुनाव में देखने को मिलेगा। मोदी जहाँ इस रामलला के मुद्दे को भुनाना चाहते हैं वहीं काँग्रेस इसे धर्म निरपेक्ष भारत की हत्या की संज्ञा दे रही है।

राम मंदिर के गर्भगृह के उद्घाटन के बाद भारतीय राजनीति – राम मंदिर के गर्भगृह का उद्घाटन भले ही 22 जनवरी को हो गया है किन्तु यह मुद्दा अभी शान्त नहीं हुआ है। इसने भारतीय राजनीति को नया मोड़ दिया है। मंदिर उद्घाटन में निमंत्रण के पश्चात कांग्रेस द्वारा अपने सांसदों, विद्यायकों को कार्यक्रम में जाने से मना किया गया था इसके त्वरित प्रभाव देखने को मिल रहे हैं। कांग्रेस के कुछ सांसदों, विधायकों व सदस्यों ने इसे गलत मानते हुये पार्टी छोड़ने का निर्णय लिया है। राजस्थान में महेन्द्रजीत सिंह मालवीय ने इसी को आधार मानकर कांग्रेस से त्याग पत्र देकर भाजपा पार्टी में शामिल होना उचित समझा। इसी प्रकार हाल ही में सम्पन्न हुए राज्यस्या सांसद चुनावों में हिमाचल प्रदेश से हर्ष महाजन का जीतना क्रोस वोटिंग का परिणाम रहा। इस प्रकार उत्तर प्रदेश मे भी सात विधायको द्वारा भाजपा के पक्ष में वोटिंग करने का अनुमान है। समाजवादी पार्टी को तीन में से एक सीट पर हार का सामना करना पड़ा। कांग्रेस के सदस्यों का निरन्तर भाजपा में शामिल होना अभी भी जारी है। 10 मार्च 2024 को एक साथ कांग्रेस के पूर्व 3 मंत्रीयों लालचंद कटारिया, रिछपाल मिर्धा तथा खिलाडी लाल बैरवा के सहित सांसदों, विधायको, प्रधान, जिला परिषद सदस्यों, पंचायत समिति सदस्यों के रूप 1370 सदस्यों ने भाजपा का दामन थाम लिया जिससे 2024 के लोकसभा चुनावों में भाजपा का पलडा एक बार फिर भारी होना निश्चित लग रहा है।

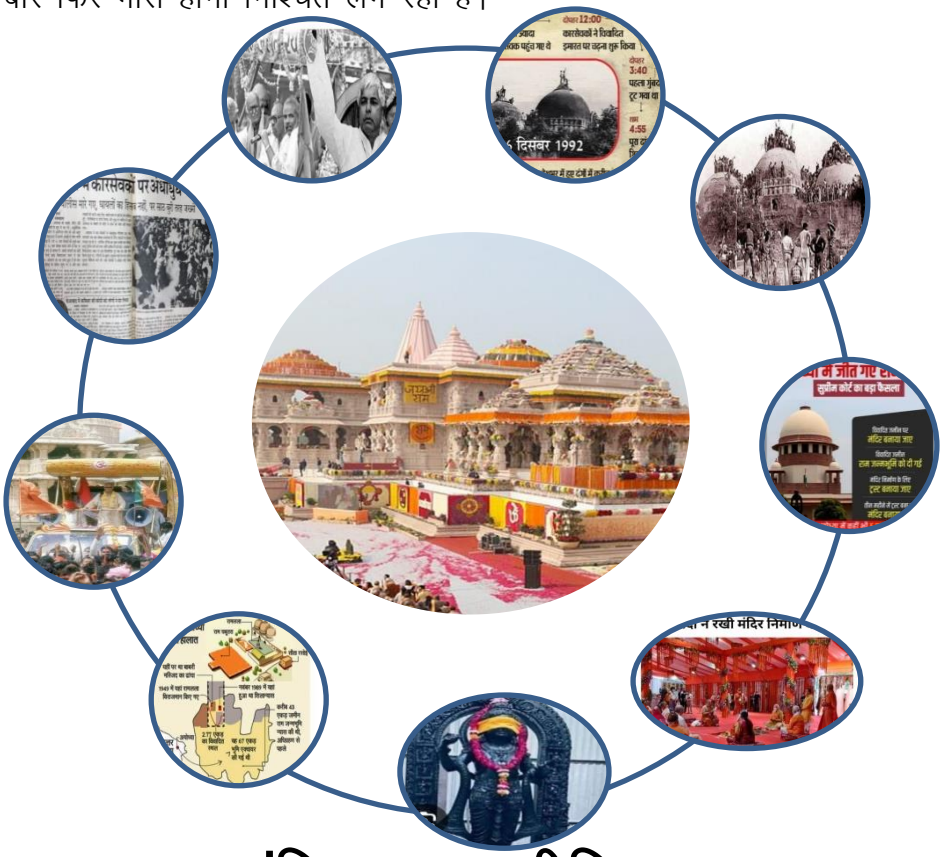

राम मंदिर व राजनीतिक घटनाक्रम

निष्कर्ष – उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट हो जाता है राममंदिर व भारतीय राजनीति का सबंध अत्यंत लम्बा रहा है तथा हिन्दुत्ववादी विचारधारा व आस्था ने इसका पक्षधर रही भाजापा को सदैव राजनीतिक सत्ता प्राप्ति में मदद की है। हाल ही में सम्पन्न हुए विधानसभा चुनावों में राजस्थान, मध्यप्रदेश व छत्तीसगढ में भाजपा को मिली एकतरफा जीत का सम्बन्ध भी कहीं न कहीं राममंदिर से अवश्य रहा है। जय श्रीराम का नारा इतना प्रखर हो चुका है कि कांग्रेस भी सॉफ्ट हिन्दुत्व को अपनाने व जय सियाराम का नारा लगाकर भाजपा का प्रतिरोध करती नजर आ रही है। भले ही राजनीतिक व्यवस्था कैसी भी रही हो किन्तु इतना अवश्य है राममंदिर निर्माण ने भारत की खोयी हुयी अस्मिता को वापस लौटाया है। 22 जनवरी को सम्पूर्ण देश का राममय वातावरण देखकर एक अद्भुत रोमांच का अनुभव हो रहा था। चहुँओर राम भजन, मंदिरों में पूजा अर्चना, कण–कण में राम की भावना, बालक से लेकर बड़ों तक राम के प्रति आस्था से ऐसा प्रतीत हो रहा था मानों श्रीराम वापस धारातल पर लौट आये है। समस्त हिन्दुओं की आपसी एकता एक अद्भुत सीमा को दर्शा रही थी। एक दूसरी दीवाली का नजारा चहुँओर दृष्टिगत हो रहा था। मन आनंदित, रोमांच महसूस कर रहा था तथा वैश्विक स्तर पर भारत का यशोगान स्थानीय राजनीति से परे वैश्विक स्तर पर अपनी धाक दर्शा रहा था। जय श्रीराम राम, राम आयेंगे, रामलला का बाल स्वरूप, भगवामय वातावरण, अयोध्या की सजावट व तैयारियाँ निश्चित रूप से दिन में प्रत्यक्ष सपने को साकार कर रहे थे।

संदर्भ ग्रंथ सूची :–

1. गुर्जर नवनीत, 2024, दैनिक भास्कर राम मंदिर लेख श्रृखंला।
2. सीताराम, लाला, राय बहादुर, अयोध्या का इतिहास, 2021, सत्साहित्य प्रकाशन।
3. कुमार पवन, सुप्रीम कोर्ट में राम लला, 2020, प्रभात प्रकाशन नई दिल्ली।
4. मिश्र प्रभाकर कुमार, एक रूका हुआ फैसला, 2020, हिन्द पॉकेट बुक्स, गुडगांव।
5. कुमार पवन, राम फिर लौटे, 2020, प्रभात प्रकाशन नई दिल्ली।
6. शर्मा हेमन्त, युद्ध में अयोध्या, 2018, प्रभात प्रकाशन नई दिल्ली।
7. शर्मा हेमन्त, अयोध्या का चश्मदीद, 2018, प्रभात प्रकाशन नई दिल्ली।
8. राव नरसिंह, अयोध्या 6 दिसम्बर।
9. सिंह अर्जुन, ए ग्रेन ऑफ सैंड इन द आवरग्लास आफ टाइम, एक आत्मकथा।
10. फौतेदार, चिनार लिव्स, एक संस्मरण।
11. दैनिक भास्कर।
12. राजस्थान पत्रिका।
13. पंजाब केसरी।
14. दैनिक नवज्योति।
15. आज तक न्यूज।
16. ए बी पी न्यूज।
17. विविध इन्टरनेट साइट्स।
18. सर्वे आधारित संकलन प्रपत्र।